महा शिवरात्रि

H
394.2
Sa 21 M

भगवान् श्री सत्य साई बाबा के
प्रवचनों से संकलित

H
394.2
Sa 21 M

महा शिवरात्रि

भगवान् श्री सत्य साई बाबा के
दिव्य प्रवचनों से संकलित

Published under arrangements with and authority of
Sri Sathya Sai Books & Publications Trust,
Prashanthi Nilayam. Distt. Anantapur A.P. 515134

Library IIAS, Shimla
H 394.2 Sa 21 M
00097920

H
394.2
Sa 21 M

97920
14/7/2000

मुद्रक :
कंवलकिशोर एण्ड कम्पनी,
करोल बाग, नई दिल्ली 110005, फोन : 5724370

महा शिवरात्रि

रूपरेखा

(१) महा शिवरात्रि कब और उसका महत्व
  (i) कब
  (ii) अंगम और लिंगम
  (iii) महत्व (शिवरात्रि तथा महा शिवरात्रि)
(२) जागरण एवं उपासना
(३) रुद्रों की भूमिका; दुःखों का कारण
  (i) रुद्र और अरुद्र
(४) रुद्र और इन्द्रिय निग्रह (रात्रि जागरण का महत्व)
  (क), (ख), (ग), (घ)
(५) शिव स्वरूप की प्रतीकात्मकता
  (शिव के विभिन्न नामों का रहस्य)
(६) विभूति अभिषेक
(७) शिव पूजा

(८) शिव परिवार
(९) पंचाक्षरी मन्त्र
(१०) सत्-चित्-आनन्द

(१) महा शिवरात्रि कब और उसका महत्व:–

(i). कब: यह पर्व माह फाल्गुन की कृष्ण चतुर्दशी की रात्रि से सम्बन्धित है।

(ii). अंगम और लिंगम: शिवरात्रि का क्या महत्व है, क्या पवित्रता है? आप उत्तर देंगे "स्वामी के उदर से लिंगोद्भव होता है"। वास्तविकता तो यह है कि आप में से प्रत्येक में लिंग है। इस **अंगम** (शरीर) में **जंगम** (विभिन्न अंगों से निर्मित इस शरीर में मन का सदा बाह्य पदार्थों की ओर संचलन) है। इस **जंगम** में है **संगम** (मन के इस संचलन से लगाव, मोह उत्पन्न होता है)। और **संगम** में होता है **'लिंगम'** (लगाव, मोह और उसके परिणामस्वरूप उत्पन्न होने वाले दुख और कष्टों के कारण व्यक्ति उस लिंग की—भगवान् की—आवश्यकता और उसके शक्ति और सामर्थ्य की याद करता है जो

उसके अन्तरतम में—हृदय की गुप्त गुहा में—है)। जो **आत्म-लिंग** प्रकट होता है उसको देखो, उससे आनन्द प्राप्त करो, किन्तु अपने आपको उसके दर्शन और आनन्द के उपयुक्त पात्र बनाओ।

(शिवरात्रि तथा महा शिवरात्रि)

(iii) महत्व: मैं आपको यह समझाता हूँ कि आज का दिन क्यों पवित्र है। पर्व के इन दिनों में महा शिवरात्रि का विशेष महत्व है। आज के दिन ईश्वर मनुष्य के बहुत निकट होता है क्योंकि मन के देवता चन्द्रमा की केवल एक कला शेष रहती है और वह भी समाप्त प्राय! आज की मध्य रात्रि के समय दिव्य तंरगें प्रत्येक मानव हृदय को छूती हैं। ऐसे समय में लोग पवित्र कर्मों में सलंग्न रह कर दिव्य तंरगों से युक्त हो जाते हैं।

आज शिवरात्रि अर्थात् शिव (सौभाग्य, सौम्यता सत्तम) की रात्रि है। यह शुभ रात्रि है क्योंकि इस रात प्रार्थना करके मनुष्य मन के स्वामित्व से मुक्त हो जाता है। चन्द्रमा मन का देवता है। मन चन्द्रमा से सम्बन्धित है तथा नेत्र

सूर्य से सम्बन्धित है। शिवरात्रि फाल्गुन महीने के कृष्ण पक्ष की चतुर्थी की रात होती है। नव चन्द्र उदय से पूर्व रात्रि मानी जाती है; जब चन्द्रमा बिलकुल दिखाई नहीं देता सिवाय इसके कि मनुष्य को चन्द्रमा का बहुत ही लघु अंश कुछ क्षण के लिये दृष्टिगोचर होता है। चन्द्रमा मन का अधिष्ठाता देवता है। इसलिये चन्द्रमा न दिखायी देने के कारण मन आज के दिन शक्तिहीन हो जाता है। इसलिये यदि आज की रात मनुष्य जागृत और सचेत रह कर मन पर विजय पाने के लिए भगवान के सान्निध्य में बिताये तो वह मन पर पूर्ण विजय पा सकता है और मनुष्य अपनी मुक्ति प्राप्त कर सकता है। इसलिये प्रत्येक माह कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी की अंधेरी रात को तीव्र साधना के लिए उपयुक्त माना गया है और वर्ष के अंतिम माह—फाल्गुन की कृष्ण पक्ष की रात्रि महा शिवरात्रि को महासिद्धि— महानपूर्णता की रात्रि माना गया है। इस रात्रि में साधना जप, भजन, स्वाध्याय, धर्मग्रन्थों का पाठ करते हुये या सुनते हुए जागरण करना चाहिये न कि सिनेमा

देखकर या जुआ खेलकर या ताश-पत्ते खेलकर। आज की रात्रि का कार्यक्रम होना चाहिये शुभ मंगलकारी, रात्रि, अच्छा देखते, अच्छा सुनते, अच्छा बोलते, अच्छा सोचते, अच्छा करते हुए बीते, ऐसा आपके सम्पूर्ण जीवन का कार्यक्रम बन जाये।

जब इस रात्रि को जागकर ईश्वर उपासना की जाती है तो उदण्ड मन के रहे सहे अंश समाप्त हो जाते हैं और साधक को विजय प्राप्त होती है। इस रात्रि को मनुष्य की १६ कलाओं में से १५ कलाएँ मनुष्य के दिव्यत्व में लीन हो जाती हैं। एक कला शेष रहती है। ईश्वर की अनुभूति के लिए यह सरल और सुविधाजनक समय है। यदि कम से कम इस रात्रि को ग्यारह इन्द्रियों को वश में रखा जाए तो मनुष्य ईश्वर का अवश्य अनुभव करेगा।

(२.) जागरण एवं उपवासः–

इस प्रक्रिया को जागरण कहा गया है। आज रात्रि के बारह घंटे यदि सभी इन्द्रियाँ वश में रखी जाएँ तभी वह जागरण होता है। यदि लाखों में एक मनुष्य भी ऐसा

जागरण करे तो पर्याप्त है। इस रात्रि ऐसा ही शुद्ध, पवित्र और दिव्य जागरण करो और दिव्य आनन्द का अनुभव करो।

शुद्ध चित्त एवं स्थिर विश्वास सहित यह रात्रि ईश्वर के गुणगान में व्यतीत करनी चाहिए। दूसरे विचारों में एक क्षण भी नहीं खोना चाहिए।

शिवरात्रि मन एवं परमात्मा में मैत्री स्थापित करने का दिन है। शिवरात्रि मनुष्य को यह चेतना देती है कि एक ही ईश्वर सर्वव्यापक है और सर्वत्र वह ही लीलारत है। कहते हैं कि शिव कैलाश पर रहते हैं परन्तु कैलाश कहाँ है? कैलाश हमारा आनन्द है, हमारा सुख है, यह हमें तभी मिलता है जब हम शुद्धतायी, स्थिरता तथा पवित्रता का विकास कर लेते हैं। उस अवस्था में हृदय शांति एवं आनन्द से भर जाता है। मन की ऐसी अवस्था ही कैलाश है और शिव तुम्हारे हृदय के, तुम्हारे शरीर रूपी मन्दिर के अंदर गर्भगृह में विराजमान होता है।

शिवरात्रि आदि पवित्र दिनों का महत्व मनुष्य को

उपासना द्वारा इन्द्रियों के दमन-नियन्त्रण तथा जागरण द्वारा अशुद्ध वृत्तियों एवं कुभावों को दूर रखने में है। यही वह दिन है जब शिव ने वह हलाहल पिया था जिससे जगत का विनाश और मानवता की मृत्यु होने जा रही थी। अध्यात्म के साधक को यह दिन कृतज्ञतापूर्वक स्मरण करना चाहिए।

(३) रुद्रों की भूमिका (दुःखों का कारण):

मनुष्य को प्रत्येक पर्व की पृष्ठभूमि समझनी चाहिए। जिन प्राचीन ऋषियों ने अंको तथा ईश्वर में संबंध की खोज की उन्होंने यही देखा कि शिवरात्रि की गणना ग्यारह बनती है। अंक विज्ञान के अनुसार वर्णमाला के प्रत्येक अक्षर का एक अंक-मूल्य होता है। "शि" का मूल्य ५ है, "व" का मूल्य ४ है, "रा" का मूल्य २ है। (शि = ५, व = ४, रा = २) तीनों का योग ११ है, ये एकादश रुद्र कहलाते हैं। चतुर्थ अक्षर "त्रि" प्रथम तीन अक्षरों के सम्मिलन को प्रकट करता है। इन रुद्रों को अंधकारमय माना जाता है जो लोंगों को रुलाते हैं।

ये एकादश रुद्र कौन हैं? पाँच कर्मेन्द्रियाँ पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ और मन ही एकादश रुद्र हैं। ये ग्यारह रुद्रों द्वारा शासित होते हैं।

इन रुद्रों का कार्य क्या है? बुद्धि के साथ मिलकर ये रुद्र मनुष्य के मन में प्रवेश करते हैं और अनेक प्रकार की चिन्ताओं और दुःखों को जन्म देते हैं। इन में तीन प्रकार के दुःख मुख्य हैं:—

आधिभौतिक दुःख

आध्यात्मिक दुःख

और आधिदैविक दुःख

आधिभौतिक दुःख का कारण पंच तत्व (आकाश, वायु, अग्नि, जल एवं पृथ्वी) तथा पंच कोश (अन्नमय, प्राणमय, मनोमय, विज्ञानमय, और आनन्दमय) हैं। ये दुःख अन्य मनुष्यों द्वारा, पशुओं तथा जीव जन्तुओं द्वारा मिलते हैं।

आध्यात्मिक दुःख का कारण वात, पित्त और कफ होता है।

अधिदैविक दुःख का कारण बाढ़, सूखा, तूफान, भूकम्प आदि प्राकृतिक उत्पात होते हैं।

मनुष्य द्वारा भोगे जाने वाले सभी दुःखों में इन तीन श्रेणियों में आने वाले दुःख मुख्य हैं। अन्य सभी दुःख इन तीन के अन्तर्गत आ जाते हैं।

इन सभी दुःखों के लिए एकादश रुद्र कारण हैं। समस्त संसार रुद्रों से व्याप्त है। केवल 'अधिदैविक' में ही थोड़ा बचाव है।

रुद्र से निस्सृत हर तत्व भय से युक्त है। रुद्र शब्द से ही इसकी भयानक शक्ति लक्षित होती है। रुद्र का अर्थ है भय उत्पन्न करने वाला। एकादश रुद्र भयानक रूप वाले हैं। ये भयानक रुद्र मनुष्य के मन में प्रवेश कर जाते हैं और उन्हें अनेक रोगें से ग्रसित करते हैं।

रुद्र मनुष्य की बुद्धि में प्रवेश करके उसकी इच्छाओं को संसार में प्रवृत्त करते हैं, जिससे मनुष्य में आसक्ति, घृणा एवं वासनापूर्ति की इच्छा जागृत होती है। क्योंकि रुद्र मन को ईश्वर विमुखी करते हैं, इसलिए उन्हें रुद्र कहते है।

ऋषियों ने घोषणा की कि जो कोई भी शिवरात्रि पर रुद्रों पर अंकुश रखेगा वह ईश्वर का अनुभव करेगा। इसका अर्थ यह है कि मोक्ष प्राप्त करने तथा ईश्वर साक्षात्कार के लिए इच्छाओं का नियंत्रण प्रमुख है।

(ii) रुद्र और अरुद्र:

"यातेरुद्र शिवा तनूर्ओर पापनाशिनी" वेदों के दिव्य प्रणेता, प्रजापति की दो प्रकृतियाँ और नाम हैं, दो रूप और लक्षण हैं—भयंकर रूप, जो रुद्र के नाम से प्रसिद्ध है और मंगलकारी रूप जिसे शिव कहते हैं। जब भगवान नरसिंह (सिंह के सिर वाला मनुष्य) रूप धारण कर हिरण्यकश्यप के सभा कक्ष में खम्भे से प्रकट हुये थे तो उसके नन्हे पुत्र प्रह्लाद को उनका रूप करुण, मनोहर और दयापूर्ण आभासित हुआ क्योंकि वह ईश्वर के प्रति अगाध श्रद्धा में सराबोर था। किन्तु उसका पिता जो ईश्वर को नहीं मानता था और जिसने उनका तथा उनके भक्तों का अपमान करने का साहस किया, उसे प्रभु का भयानक रुद्र रूप दिखाई दिया। जहाँ प्रह्लाद

आनन्द से गा और नृत्य कर रहा था वहाँ हिरण्यकश्यप भय से काँप रहा था। अतः यह स्पष्ट है कि मनुष्य एक ही प्रभु में दो विरोधी रूप—रुद्र और अरुद्र देखता है जो उसके स्वयं के मानसिक निर्णय का प्रतिबिंब होता है।

एक ही प्रभु स्वयं को रूपों में प्रकट करता है जिससे संसार का पालन-पोषण, सुधार तथा निर्मलीकरण हो। रुद्र और अरुद्र—ये दोनों लक्षण ही पृथ्वी पर प्रत्येक वस्तु में इकट्ठे पाये जाते हैं क्योंकि क्या वे उसी आत्मसम्मान प्रभु के ही अंश नहीं हैं?

भोज्य-पदार्थों को ही लो। जब कुशलतापूर्वक तथा सन्तुलित मात्रा में ग्रहण किया जाता है तो इनमें शिवम् रूप होता है। किन्तु जब भोजन को मूर्खतापूर्वक और अधिक मात्रा में ग्रहण किया जाये तो इसका परिणाम रुद्रम भी हो सकता है। आनन्द प्रवाह में बाधा डालने वाली प्रत्येक वस्तु या विचार, प्रत्येक ऐसी स्थिति अनुभव और विचार-रुद्र है; मर्यादा, नियम, नियन्त्रण, उन्नति तथा

शुद्धिकरण की ओर बढ़ता हुआ प्रत्येक चरण शिवम्, पवित्र, फलदायक और लाभप्रद है।

यह मनुष्य की इच्छा ही है जो उसमें प्रवेश करती है और यही भोजन को वरदान या विष बनाने की जिम्मेदार होती है। चित्त ही इच्छा उत्पन्न कर इसे आदेश देता है। एक तीक्ष्ण धार वाले चाकू का प्रयोग फल काटने के लिये भी किया जा सकता है और किसी पर प्रहार करने को भी किया जा सकता है; यदि यही चाकू शल्यवैद्य के हाथ में हो तो यह किसी के नाश की अपेक्षा किसी की जीवन रक्षा कर सकता है। चित्त तुम्हें दासत्व से मुक्त कर सकता है या तुम्हें भौतिक संसार से और अधिक बाँध सकता है।

ईश्वर विश्वव्यापी है। यह सभी प्राणियों का अन्तः प्रेरक है। अतः हमें उसे अन्तः निवासी तथा चित्त नियंता के रूप में प्रतिष्ठित करना है। जब वह हमारे चित्त को हमारे हित में संचालित करता है तो हम उसे शिवम् कह सकते हैं; जब वह उपहास या जान-बूझकर हमारे विरुद्ध हो जाये तो हम उसे रुद्र कह सकते हैं।

यहाँ एक अन्य बात का स्पष्टीकरण आवश्यक है। जब हमें सुख प्राप्त हो तो हमें प्रभु को शिवम् और दुःख प्राप्त होने पर रुद्रम नहीं कहना चाहिए। क्योंकि सुख-दुःख दो भिन्न अनुभव नहीं हैं। एक की अनुपस्थिति दूसरे की उपस्थिति है। ये परस्पर दृढ़तापूर्वक सम्बद्ध हैं। प्रसन्नता तो असम्भव है; सुख तो दुःखद क्षणों का अन्तराल है और दुःख दो सुखों का मध्यान्तर है।

जब सब कुछ अनुकूल होता है तो तुम कहते हो कि ईश्वर तुम्हारे निकट है, जब सब कुछ प्रतिकूल हो जाता है तो तुम कहते हो कि ईश्वर तुम्हें दुःख दे रहा है और तुम से बहुत दूर चला गया है। प्रभु निकट या दूर नहीं होता। जितना तुम प्रभु के निकट हो उतना ही प्रभु भी तुम्हारे निकट है। वह तो सदैव हृदय में ही वासित है।

वहाँ प्रभु को पहचानो। वहाँ सर्वाधिक निकटतम् रूप में उसकी अनुभूति करो। वह तो तुम ही हो, न तो रुद्र और न अरुद्र; केवल विद्यमान है।

(बृन्दावन ३०-५-९४ वचनामृत)

(४) रुद्र और इंद्रिय निग्रह
(रात्रि जागरण का महत्व)

(क) महा शिवरात्रि पर्व का लक्ष्य इन एकादश रुद्रों का शमन करना है। शिवरात्रि का दिवस परमेश्वर की पूजा द्वारा एकादश रुद्रों पर विजय पाने के लिए है क्योंकि परमेश्वर एकादश रुद्रों का स्वामी है। ऋषियों ने ईश्वर साक्षात्कार के लिए इन्द्रिय संयम के परम महत्व पर बल दिया है। इन्द्रियों के निग्रह द्वारा रुद्रों को नियंत्रित किया जा सकता है। परन्तु यह कार्य इतना सरल नहीं। बाह्य सोत्रों से आने वाले बुरे आवेगों को नियंत्रित कर लेने पर भी अन्तर से उठने वाले आवेग सरलता से नियंत्रण में नहीं आ सकते। परन्तु वर्ष के ३६५ दिनों में से कम से कम यदि एक रात्रि को भी इन्द्रियों पर संयम रखा जाए तो शांति की अनुभूति हो सकती है और मुक्ति की खोज प्रारम्भ हो सकती है। जब पूरी रात्रि भगवन्नाम के गायन को समर्पित होती है तो मनुष्य के मन, वचन और इन्द्रियाँ

ईश्वर पर केन्द्रित हो जाते हैं। यह स्वयं में एक प्रकार का इन्द्रिय-निग्रह है। वर्ष में कम से कम एक दिन हमारे समस्त विचार और शब्द ईश्वर पर केन्द्रित किए जाने चाहिए। ऐसा करने पर लोग सत्यम् शिवम् सुन्दरम् के रूप में वर्णित ईश्वर को जान सकते हैं।

(ख) इन्द्रियों को वश में रखना आसान नहीं। अर्जुन जैसे प्रबुद्ध व्यक्ति ने भी श्रीकृष्ण के समक्ष स्वीकार कियां कि इन्द्रियजय सब से कठिन है। ऋषियों को यह रहस्य अपने अनुभव से ही ज्ञात था, इसीलिये उन्होंने परामर्श दिया कि यदि हर समय इन्द्रियों पर नियंत्रण संभव न हो तो कम से कम शिवरात्रि जैसे पर्वों पर इन्हें वश में रखना आवश्यक है। निष्क्रिय व्यक्ति का मन सब दिशाओं में दोड़ता है। इस के लिए ऋषियों ने ईश्वर का चिंतन निर्धारित किया है। ईश्वर नाम जप तथा उसकी महिमाओं का ध्यान मन को संसार की तुच्छ वस्तुओं से दूर रखता है और इन्द्रियाँ भी वश में रहती है।

(ग) ग्यारह इन्द्रियाँ मनुष्य को विषय वासनाओं से युक्त कर उसे सांसारिक बन्धन में खींचती हैं। इन ग्यारह के अतिरिक्त परमात्मा है। परमात्मा में विश्वास द्वारा मनुष्य ग्यारह इन्द्रियों को वश में कर सकता है। शिव और रंगा या राम और कृष्ण में किसी को अन्तर नहीं करना चाहिए क्योंकि किसी भी नाम से पूजा जाए, ईश्वर एक है। इस बात को समझो कि ईश्वर सभी प्राणियों में निवास करता है। सभी से प्रेम करो। इस बात को जानो कि भगवान के सभी नामों का सार एक है। इसी भावना से ईश्वर का नाम गाओ। जब तुम इस प्रकार से भजन गाओगे तो समस्त मानवता की एकता पहचानोगे। सामूहिक भजन से सभी लोगों में ऐक्य की भावना आती है।

राग और लय के साथ तुम्हें अपने भजन को भावपूर्ण ढंग से गाना है ताकि तुम्हारा भजन भगवान के चरणों में अर्पित भेंट बन जाए। बिना भाव के राग रोग बन जाता है। जब सब लोग मिलकर एक साथ भजन गाते

हैं तो इससे अत्यन्त पावन प्रकंपन प्रस्फुटित होते हैं और देवी ऊर्जा उत्पन्न होती है जिससे संसार में महान परिवर्तन हो सकते हैं।

(घ) शिवरात्रि के जागरण का उद्देश्य है पवित्र, परम शुद्ध, महिमावान तथा अतिशय सुन्दर ईश्वर की मूर्ति का ध्यान करना। पुरातन ऋषियों ने भारतीय संस्कृति के अनुपम मूल्यों को अनुभव किया और संसार के लिए इसे अमूल्य उत्तराधिकार के रूप में छोड़ा। अधिकतर वर्तमान कालीन लोग भारतीय संस्कृति से अवगत नहीं हैं—क्या है हमारी संस्कृति, परम्पराएँ तथा सनातन धर्म। जो व्यक्ति इन तीन का जानकार नहीं वह भारत की अनादि संस्कृति का ज्ञाता नहीं। इस संस्कृति का मूल या केन्द्रीय तत्व सनातन धर्म है। यह ऋषियों के अनंत कठोर तपों, तथा ईश्वर समर्पित वृत्तियों से उद्भूत अमृत की विशाल धारा है। इन ऋषियों ने अज्ञानता, अन्धविश्वास या मूढता से यह अनुभव नहीं किये। वे वृहद पारदर्शी, स्वार्थ एवं आसक्ति से मुक्त महानुभाव थे। स्वार्थ हीन जिज्ञासा तथा व्यक्तिगत अनुभव

द्वारा खोज करके ये सत्य संसार को दिये।

आज के जगत में जानकारी और निपुणता की अधिक वृद्धि हो गई है परन्तु मानवीय मूल्यों का ह्रास हो गया है। बिना सूझबूझ के तर्क से काम लिया जाता है।

यह स्पष्ट से समझ लेना चाहिए कि ईश्वर साक्षात्कार, सामान्य दृष्टि, तर्क संहिता अथवा बुद्धिमत्ता से नहीं हो सकता।

(५). शिव स्वरूप की प्रतीकात्मकता

(शिव के विभिन्न नामों का रहस्य):–

(क) शिव-स्वरूप के वर्णन में सृष्टि का रहस्य स्पष्ट होता है। शिव के मस्तक पर चन्द्रमा मनुष्यों में चेतना का प्रतीक है, गंगा प्राण शक्ति की प्रतीक है और शिव के शरीर पर सर्प असंख्य जीवित प्राणियों के प्रतीक हैं। वे चाँदी के पर्वत पर निवास करते हैं। धन के देवता कुबेर उनके सबसे प्रिय मित्र हैं। इस सबके होते हुए भी वे कमंडलु क्यों लिए रहते हैं? विश्व को

यह दिखाने के लिए कि सभी प्रकार का ऐश्वर्य आध्यात्मिक उन्नति में बाधक है, शिव ने सभी वस्तुओं का परित्याग कर दिया। वैराग्य के द्वारा ही शिव परम आनन्द के शाश्वत मूर्तरूप बन गए।

(ख) **साम्ब शिवः**

ईश्वर का एक और नाम है। इस नाम में निहित प्रेम तत्व को ठीक प्रकार से जान लेने पर ही ब्रह्माण्ड का वास्तविक स्वरूप जाना जा सकता है। वह नाम है साम्ब शिव। "सा" का अर्थ है दिव्य। अम्बा का अर्थ है ब्रह्माण्ड। शिव का अर्थ है परम पुरुष।

(ग) **योगशिखाः**

ईश्वर का एक और नाम हैः योगशिखा। नभ उसका नीलवर्णी रूप है। दिक् (दिशाएँ) उसका परिधान हैं। अतः उसे दिगम्बर कहते हैं। उसें पंचानन भी कहते हैः पाँच सिर वाला। पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश पांच सिर हैं। ईश्वर के पाँच शीर्ष पंचभूतों का प्रतिनिधित्व करते हैं।

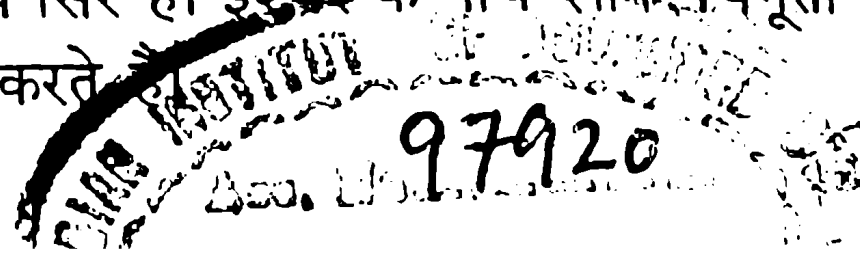

(घ) **भूतनाथः**

शिव को भूतनाथ भी कहते हैः प्राणियों का स्वामी। भूत का सम्बन्ध सृष्टि से है। ईश्वर जगत के सभी जन्तुओं का स्वामी है। अतः संपूर्ण ब्रह्माण्ड ईश्वर की प्रतिच्छाया है।

(ड़) **"सकल ऐश्वर्य का स्रोत"—शुभंकर**

शिव को शुभंकर कहते हैं अर्थात् जो सदा शुभ है। संसार में जो भी देह धारण करता है चाहे मानव, देवता या अवतार हो, देह तो कभी न कभी अशुभ होती ही है। ऐसे लोगों के नाम के पूर्व "श्री" इसलिए लगाया जाता है क्योंकि इसके बिना वे देह धारण के कारण अशुभ रहते हैं। कृष्ण, राम, वेंकटेश्वर आदि के नाम के पहले भी इसीलिए "श्री" लगाया जाता है। ईश्वर के पहले "श्री" नहीं लगाया जाता क्योंकि ईश्वर तो सदा शुभम् की स्थिति में रहता है। शंकर को "श्री" की आवश्यकता नहीं है क्योंकि वे सदा शुभ हैं। शिव को "श्री शिव" नहीं कहते। ईश्वर तो समस्त शुभम्

और पवित्रता का मूर्तरूप है। अतः उसे किसी उपाधि की आवश्यकता नहीं है। वह सकल ऐश्वर्य का स्रोत है।

मनुष्य पुरुष और प्रकृति के संयोग से उत्पन्न होता है। परिणाम स्वरूप मनुष्य को ईश्वर का सतत आनन्द प्राप्त रहना चाहिए और उसे सदा धन्य होना चाहिए। मनुष्य प्रकृति के रूप में बना है। वह स्वयं को ईश्वर के गुणों का चिन्तन कर के ही दिव्य बना सकता है।

(च) **त्रिनेत्रः**

शिव के तीन नेत्र तीन लोकों का प्रतिनिधित्व करते हैं। शिव का त्रिशूल समय के तीन स्वरूपोंः अतीत, वर्तमान और भविष्य का प्रतीक है। सत्व, रजस और तमस ये तीन गुण ब्रह्मा, विष्णु और शिव की त्रिमूर्ति के प्रतीक हैं। अतः तीन लोक, समय के तीन स्वरूप और तीन गुण ईश्वर तत्व के प्रकट रूप हैं। जब ईश्वर को इस प्रकार हृदय में प्रतिष्ठित किया जाता है तो मनुष्य ईश्वर के स्तर तक उठ जाता है।

(छ) शिवाराधना:

संसार के कल्याण के लिए ही शिव ने हलाहल विष का पान किया थां। संसार के कल्याण के लिए ही शिव ने गंगा को अपनी जटाओं में धारण किया था। शिव अपने मस्तक पर चन्द्रमा को धारण करते हैं ताकि मानवता को मन की शान्ति प्राप्त हो। जब मनुष्य स्वयं को ईश्वर के अनुरूप ढालेगा तो वह अपनी बुरी प्रवृत्तियों से मुक्ति पाकर संसार को अपने सद्गुण प्रदान करेगा। यही शिवाराधना का अर्थ है। अपने बुरे विचार, बुरी इच्छाओं और बुरे कर्मों को पूरी तरह त्याग कर ही मनुष्य स्वयं को दिव्यत्व में परिवर्तित कर पाएगा।

(ज) विभूति अभिषेक:

यहाँ पर मनाया गया शिवरात्रि उत्सव तुम्हारे लिए एक उदाहरण है। तुम पूछ सकते हो—"स्वामी ने प्रायः यह घोषित किया है कि सर्व दिन पवित्र दिवस हैं। ऐसा कोई विशेष नियम या संस्कार नहीं है जो किसी एक विशेष दिन किया जाना चाहिये। किन्तु स्वामी स्वयं इस

मूर्ति पर विभूति वर्षित कर इसे अभिषेकम् कह रहे हैं, क्या यह उचित है?" तुम्हें पाठ पढ़ाने के लिये ही स्वामी ऐसा कह रहे हैं।

विभूति अभिषेक का प्रबल गूढ़ार्थ है, जिसे ग्रहण करने की स्वामी तुमसे अपेक्षा करते हैं। यथार्थ आध्यात्मिक भाव में विभूति अमूल्य वस्तु है। तुम्हें ज्ञात है कि शिव ने मन्मथ (क्योंकि वह चित्त को विह्वल करता है और यहाँ पूर्वतः उत्पन्न व्याकुलता को और संक्षुब्ध बना देता है) नामक कामदेव को भस्मीभूत कर दिया था। शिव ने उस भस्म से स्वयं को अलंकृत किया और इस प्रकार वह 'काम विजेता' के रूप में तेज से देदीप्यमान था। काम का नाश होने पर प्रेम का परम साम्राज्य हो जाता है। जब चित्त को विह्वल करने वाली इच्छा समाप्त हो जाती है तो सच्चा और परिपूर्ण प्रेम हो संकता है। प्रचण्ड व प्रबल कामनाओं पर विजय का संकेत हुई भस्म से महान् तुम ईश्वर के गुणगान के लिये और क्या भेंट कर सकते हो? भस्म वस्तुओं की चरम स्थिति होती है,

इसमें कोई परिवर्तन नहीं हो सकता। विभूति से अभिषेक तुमको यह प्रेरित करने के लिये किया जाता है कि तुम कामनाओं का त्याग करो और इसके विनाश से बनी भस्म को अपने द्वारा अर्जित सभी वस्तुओं में सर्वाधिक मूल्यवान समझ उसे शिव को अर्पित कर दो। भस्म उन पुष्पों के समान नहीं होती जो दो तीन दिन में धूमिल हो जाते हैं; यह जल के समान शुष्क, लुप्त या मलिन और अपेय नहीं होती। यह उन पत्तों के समान रंगहीन नहीं होती जैसे वे किंचित् घंटों में हो जाते हैं जिस प्रकार फल अल्प दिनों में गल जाते हैं किन्तु यह नहीं गलती। अतः अपने माया-मोह, पापों और बुरी आदतों को भस्मीभूत कर स्वयं को विचार, वचन और कर्म में पवित्र बना शिव उपासना करो।

(७). शिव पूजा:—

शिव की त्रिपत्र बिल्व से पूजा की जाती है क्योंकि वह त्रिलोकी है, समय का त्रिद्रष्टा है और प्रकृति का त्रिगुणी है। वह तीन प्रकार के दुःख दूर करता है; वह

मूलाधार है, वह आनन्द स्रोत है, वह मृदुता की प्रतिमूर्ति और पीयूष प्रवाह है। क्योंकि प्रत्येक वाणी शिव स्वरूप है (क्योंकि शिव के बिना यह केवल 'शव' है) अतः मनुष्य को अपना जीवन उस दिव्य स्थिति के अनुरूप बनाना है।

(८). शिव परिवारः—

यह भी ध्यान देने योग्य है कि भगवान का परिवार एक आदर्श परिवार है, जहाँ विरोधी तत्वों के बावजूद शांति और एकतानता बनी रहती है। शिव का वाहन नन्दी, पार्वती का वाहन सिंह, गणेश का वाहन चूहा और सुब्रमणियम का वाहन एक मोर स्पष्ट ही एक दूसरे के शत्रु हैं। परन्तु भगवान की उपस्थिति में रहने के कारण वे शत्रुता त्याग कर एकता पूर्वक रहते हैं। दैवी परिवार में एकता इस तथ्य की परिचायक है कि जहाँ दैवत्व है वहाँ शांति और मैत्री है। घृणा और असूया उस समय पैदा होती हैं जब मनुष्य ईश्वर को भूल जाता है।

(९). पंचाक्षरी मन्त्रः (नमः शिवाय):–

पंच भूतों द्वारा निर्मित मानव देह जो पाँच इन्द्रियों से युक्त है, यजुर्वेद में वर्णित "नमः शिवाय" पंचाक्षर मन्त्र की शक्ति से अनुप्राणित हैं। यह मुख्य मन्त्र है, इसका अर्थ है—"ध्यान करने पर रक्षा करने वाला"। प्रत्येक मन्त्र का एक बीज अक्षर होता है जो मन्त्र के आरम्भ में जुड़ा होता है जो मन्त्र को अत्यन्त प्रभावित बनाता है। सर्व प्रथम, ईश्वरेच्छा से ध्वनि का उद्भव हुआ इसलिए प्रत्येक मन्त्र की प्रभावकारिता हेतु बीज अक्षर का होना अनिवार्य है। अक्षर वेदों या तन्त्रों द्वारा पवित्र किये गये हैं। पंचाक्षरी मन्त्र "नमः शिवाय" के लिए बीज अक्षर वैदिक ध्वनि, "ॐ" है।

ॐ अंग्रेजी भाषा के A, U, M वर्णों को मिलाकर बोला जाता है। इसमें से प्रत्येक अक्षर आध्यात्मिक ऊर्जा से रिक्त है, परन्तु मिलाये जाने पर इनमें से ऊर्जा कंपन उद्भव होता है।

मन्त्र में "शिवाय" का अर्थ है शिव के लिए।

"शिव" समृद्धि धन, आनन्द तथा वैभव का दाता है। पंडितों ने इस मन्त्र की परिभाषा एवं व्याख्या कितने ही प्रकार से की है। परन्तु इस मन्त्र की एक अत्यधिक गुह्य तथा व्यापक धारणा है। इसको सदा ॐ से आरम्भ किया जाता है। नमः (नमस्कार) ॐ के लिए है जिसमें शिव तत्व का लक्षण है, जो मंगल स्वरूप है।

(१०) सत्-चित्-आनन्दः

ईश्वर की अनुभूति सत्-चित्-आनन्द के रूप में होती है। सत् क्या है? जिसकी शाश्वत उपस्थिति है वह सत् है। इसका अर्थ यह है कि वस्तु के न रहने पर भी उसके गुण उपस्थित रहते हैं। वेदान्त की भाषा में इन गुणों को अस्ति, भाति और प्रियम कहते हैं। "अस्ति" का अर्थ है "अस्तित्व"। इसकी तुलना चीनी की मिठास से की जा सकती है। मिठास के स्थायी गुण के कारण चीनी को "सत्" कहा जा सकता है।

"चित्" चैतन्य है। इसकी तुलना जल से की जा सकती है। जब सत् (चीनी) चित् (जल) से मिलती है

तो न जल रहता है न चीनी केवल शर्बत रहता है। सत् और चित् के मिलने से आनन्द की उत्पत्ति होती है। जब अपरिवर्तनशील शाश्वत दिव्यत्व परिवर्तनशील जड़ प्रकृति से मिलता है तो आनन्द प्रकट होता है। महाशिवरात्रि का महत्व यही है कि यह ऐसा शुभ अवसर होता है जब सत्-चित्-आनन्द की अनुभूति हो सकती है।

एकादश रुद्र मानवता को अनेक प्रकार से पीड़ित करते हैं परन्तु यदि मनुष्य इंद्रिय निग्रह द्वारा अपना मन ईश्वर की ओर मोड़ ले और स्वयं को भगवद् कार्यों में समर्पित कर दे तो उसे मोक्ष का मार्ग मिलेगा। मोक्ष का अर्थ है मोह से मुक्त होना।

इस प्रकार मनुष्य को शिवरात्रि जैसे पवित्र पर्वों का वास्तविक महत्व समझना है।

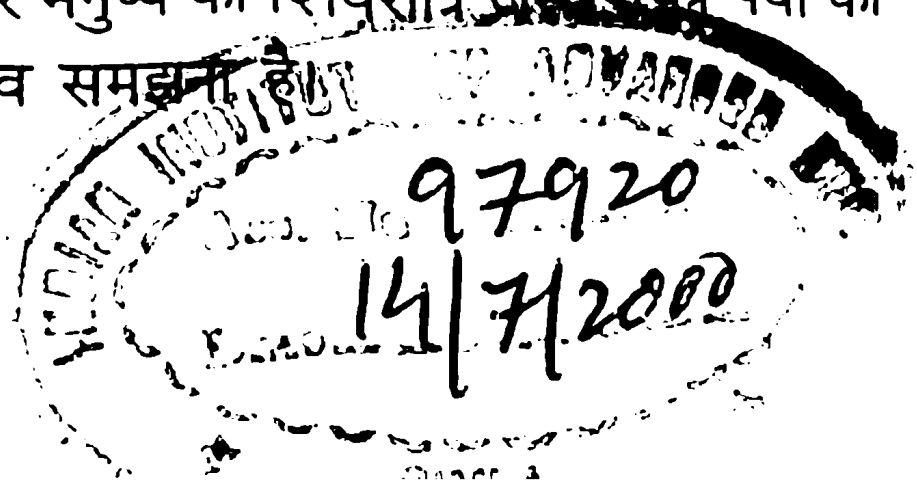

Library IIAS, Shimla
H 394.2 Sa 21 M
00097920